लोककथाक बिसेसता

हर चीज कर आपन गुण हेव हे, विशेषता हेव हे, एकर से ऊ आपन अलग पछान बनवहे। लोककथाको आपन खास गुण हे जकर चलते एकर शिष्ट साहित्य से फरक पछान हे। डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय **'लोकसाहित्य की भूमिका'** नामक किताबे लोककथाक विशेषता बतवल हथ, जकरा हर बिदुवान मुक्त कंठ से मानहथ ऊ हे – (1) प्रेम कर अभिन्न पुट (2) अश्लील श्रृंगार का अभाव (3) मनुष्य की मूल प्रवृतियों से निरन्तर साहचर्य (4) मंगलकामना की भावना (5) सुख और संयोग से कथाओं का अन्त (6) रहस्य, रोमांच एवं अलौकिकता की प्रधानता और (7) वर्णन की स्वाभाविकता।

लोककथा में जीवन कर हर प्रकार कर तस्वीर देखा हे, हर रूप के देखवल जाहे, से खातिर 'प्रेम' कर चित्रण स्वाभाविक हे। प्रेम चाहे पति–पत्नीक (दाम्पत्य) हे इया माय–बेटा, बाप–बेटीक आजी–नातीक ई सब 'वात्सल्य प्रेम' कर अंग लागे। हर में आदर्श आर विशुद्ध प्रेम मनोहारिणी पवित्र गंगा नीयर लोककथाक विस्तृत (बगरा) वक्षस्थल में हमेशा बोहइत रहहे। कहुँ भाय–बहिनक पियार (भातृत्व प्रेम) सुनवइया के मोहित करहे कहीं पति–पत्नीक कर आदर्श प्रेम आकर्षित करहे, कहीं माय–बाप कर सहज पियार–दुलार, बेटा–बेटी के विमोहित करहे तो कहीं संतान स्नेह–दुलार की विवशता साकार देखाहे।लोककथाहूँ बिहाक पहिले प्रेम करेक परिपाटी पावहे।

लोककथा में जे श्रृंगार प्रेम कर वर्णन रहहे ओकर में अश्लीलताक अभाव हे। हियांक श्रृंगार प्रेम सात्विक आर पवित्र होवहे। से खातिर कहे में कहूँ कोय संकोच नी हेवहे।

लोककथा के कोरी कल्पनाक कहनीयो कहहथ, मगुर कल्पना के सुन्दर पांइख लगाई के उड़वइया कहनी मानव मन में निवास कर हे । ई ले कि एकर में मूल प्रवृति से निकट आर निरन्तर साहचर्य (सम्बन्ध) रहहइ।मानव कर सुख–दुख,कामना,लालसा, क्रोध, कौतुहल, शान्ति–विद्रोह, घृणा–प्रेम, हेन–तेन हर प्रकार के मनोविकार कर समावेश होवेक स्वाभाविक गुण पावाहे।

लोककथाक अन्त मंगलकामना से करल जाहे। दुःखान्त कहनी सुइन के सुतल से राइत में बउवाइक डर रहहे।सुखान्त कहनी सुइन के सुतल से चइन कर नींदे सुतल जाहे।

लोकमानस कौतूहल के आकांक्षी हेव हे से ले अलौकिक घटना इया
दृश्य,रहस्य के खोलेक–बतवेक कहनी सुने में बेसी आनन्द आव हे।देवी–देवता, देव–दानव, परी–अप्सरा, भूत–पिचास से जुड़ल कहनी सुने में बेसी आनन्द आव हे।

लोककथाक सबसे बोड़ गुण हे उत्सुकता। उत्सुकता के बनाय राखेक चलते सुनवइया हुंकारी भरहे। हुंकारी भरइत रहल से कहवइया (कथक्कड़) के मन लागहे। जे कहनी में उत्सुकताक भाव नी रहहे ओकरा असफल कहनी कहल जाहे।

लोककथाक (कहनीक) वर्णन बड़ा स्वाभाविक ढंग से करल जाहे। कथानक कर घटना, पात्र, आर कथन शैली एक संगे अइसन गूंथल रहहे कि ओकरा फरक नाञ करल जाय सकहे। असामान्य घटना करो वर्णन एतना स्वाभाविक ढंग से करल जाहे कि सुनवइया के बनावटी (कृत्रिमता) कर आभास नी हेवहे, बरन् ऊ सच (यथार्थ) प्रतीत हेवहे।

ई सब कर अलावे लोककथा में आर कुछ विशेषता पावल जाहे जकर में 'आशावादी भावना' मुख्य हे। एकर में पलायनवाद नाञ पावल जाहे। हर कठिन से कठिन कामों के पात्र बड़ा साहस, धीरता–वीरता से करहे आर विजय हासिल करहे। हर मुसीबत के सामना करते आगू बढ़ी के काम पूरा करहे। एक अदना आदमियों बड़का राकस (राक्षस) से युद्ध करहे। परीक संगे बिहा करहे आर सुख भोग करहे।

भारतकर लोककथा भारतीय संस्कृति कर जीयत तस्वीर हे, एकर में भाग्यवाद आर

कर्मवाद कर मनि–कांचन संयोग पावल जाहे।
भारतीय भाग्यवादी बेसी हथ मगुर कर्मवाद कर उपेक्षा, निरादर नाञ कर हथ। भाग्य हामीन कर सहायक हे मगुर कर्मे ओकरा गतिवान बनवहे। जहाँ भाग्य कर बात हेवहे हुवों कर्म प्रधान बनी के रहहे। खोरठा लोककथाहूँ अइसन कहनी पावल जाहे। 'तकदीर आर तदबीर' अइसने कहनी हे।

लोककथा में प्राकृतिक वातावरण कर बेसी वर्णन मिलहे, ई ले कि मनवइ आदिम काल से प्रकृति कर गोद में रहहल। हुवें से ओकर विकास हेल। कंद–मूल खायके, नालाक पानी पी के आगू बढ़ल। पहिले बेसी बोने रहे। अइसे झारखण्ड एकरे एगो पर्याय हे। झारखण्ड प्रदेश में भारी बोन पहिले रहे। अइसे तो आइझ ढेइर उजाइर हइ गेल। से खातिर हियांक कहनी में बिजुवन कर बात आवहे, जहाँ पतय गिरे तो सूप आर झूरी गिरे तो ढेंकी बनेक बात कहल जाहे। बाघ, बांदर, सियार, भाउल, बनबकरा, बोनभंइस, हेन–तेन कर कहनी सुनावल जाहे। बाघ, बांदर से बिहा होवेक बात हियांक लोककथाञ पावाहे।

प्रायः हर लोककथा बिदुवान ई बात के एक स्वर से मानलहथ कि हर क्षेत्रकर लोककथा में कुछ समानता हे। भारत से बाहइर दोसर देशों में अइसन कहनी सुने में मिले हे, जे भारत में सुनल जाहे। एहे कही के लोककथाक मर्मज्ञ बिदुवान बेनफे लोककथाक जनम ठाँव भारत मानल हथ। एहे खातिर बेनफेक प्रसारवाद कर सिद्धान्त सबले भारी हे।

5. लोककथाक तत्व

लोककथा किंबा कहनीक तत्व ई सब हे–(1) कथानक (2) पात्र (3) चरित्र–चित्रण (4) कथोपकथन (5) देशकाल (6) भाषा–शैली आर (7) उद्देश्य।

कथानक – : 'कथ्' धातु से बनल कथानक तत्व लोककथा किंबा
कहनीक मूल भाव लागे इयानि मूल सारांश। एकर में घटना के क्रमानुसार राखल जाहे। घटना अधिक नाञ हेवहे। तीन चाइर घटना से बेसी रहल से ऊ उबाऊ हेइ जाहे। घटना क्रम में **प्रारम्भ – आरोह – चरम स्थिति आर अवरोह** हेवहे। कथानके के अभिप्राय तत्त्वों कहल जाहे।

पात्र – : लोककथा किंबा कहनीक पात्र बेसी नाञ हेवेक चाही। अदमी (मानुस) जीव–जन्तु, चरञ– चुनगुनी, बाघ, भंइस, सांप कोनो प्राणी लोककथाक पात्र हेवहथ। बेसी पात्रेक कहनी सुनवइया के नीरस करहे, ई सब कहनी के भारी बनवे हे।

चरित्र–चित्रण–:चरित्र पात्र कर आन्तरिक गुण लागे, जकर से कहनी प्रभावित हेवहे। कहनीक पात्र कर चरित्र दु रकम से उजागर हेवहे।
(क) पात्रकर आपन काम से (ख) पात्र कर बीचे हेल बातचीत से।
कहवइया कहनीक पात्रेक चरित्र के नाञ फूरछावे हे। सुनवइया ठीने छोइड़ देहे।

कथोपकथन – : कथोपकथन इयानी बातचीत से पात्र कर प्रवृति (लक्षण) साफ देखाहे, चूँकि लोककथा, कहवइया (कथक्कड़) से कहल जाहे, ऊ कहनी के रोचक, आकर्षक आर स्वाभाविक बनवेक चेस्टा करहे। संवाद (बात–चीत) में ऊ पात्र, वातावरण, समय हेन–तेन कर धेयान राखहे।

देशकाल – : कहनीक कथानक आर ओकर पात्र कोय नी कोय देश आर काल (समय) से जुड़ल रहहे। प्रभाव बढ़वे खातिर ओकर एगो वातावरण हेवहे, ओकरे अनुरुपे ओकर चित्रण से कहनीक रस–निष्पति हेवहे जकरा ग्रहण करल जाहे।

भाषाशैली – : शैली कर शाब्दिक अर्थ हे– ढंग, तरीका। अंग्रेजी में एकरा स्टाइल कहल

जाहे। लोककथाक शैली बड़ा सरल आर स्वाभाविक हेवहे। कहवइया जखन सुध ढंग से ओकरा कही सुनावत ओहे ओकरा ग्रहण करत।

उद्देश्य – : हर कहनी कर उद्देश्य हेवहे। कोय मनोरंजनेक खातिर सुनवल जाहे कोय सीख दिये खातिर। धार्मिक दृष्टि से सुनवल कहनी कोनो परब–तेवहारे सुनवल जाहे।

6. लोककथाक उद्गम सिद्धान्त

ई सर्वविदित हे कि जतना वाद हे ओतने अपवादो हे, मेनेक 'वाद' मत–विचार बा सिद्धान्त हे तो अपवाद ओकर आलोचना। ई तय हे कि हर सिद्धान्त कर आलोचना रहेक जरूरी हे, ई कहियो छुइट नाञ सकहे काहे कि ई दुइयों में चोली–दामन कर नाता हे। लोककथा कर उद्गम कर बारे कइ विचार आइल हे, जकरा सिद्धान्त नाम देल गेल हे। हेठे कुछ सिद्धान्त आर ओकर आलोचना के राखल जाय रहल हे –

1. प्रसारबाद कर सिद्धान्त– ई सिद्धान्त बा मत के रखवइया हे जर्मनी के नामी बिदुवान बेनपेफ, जे तुलनात्मक अध्ययन कइरके बतवल हथ कि भारते सोब लोककथाक जनम ठाँव हे। हियें से लोककथा बाहइर गेल हे, मेनेक हियाँक लोक जन्दे गेला, जहाँ गेला, ऊ आपन संग लोककथा को लेले गेला। इनखर समर्थक सभेक कहेक हे कि जे नीयर भासाक उद्गमेक बारे निश्चित रूपे कुछ नाञ कहल जाहे, ओहे नीयर लोककथा को बारे कहल जाय पारे। इयानि लोके मनोरंजन खातिर सच झूठ बात के घटनाक्रम में सजाइके कइह देला, बस ऊ लोककथा (कहनी) बइन गेल ।

भारतेक संस्कृत साहित्य के पढ़ल बादे बेसी से बेसी बिदुवान लोकेक मानेक हे कि ई आर्य जाति आर भासा कर देन लागे आर निश्चित तौर पर ऊ आर्य कहीं अन्ते से नाञ आइल हथ मगुर भारते से अन्ते दोसर बाठे गेल हथ ।

बिसेसता– ई सिद्धान्त कर बिसेसता ऊपरे कहल बातें साफ फुरछा हे मेनेक (i) लोककथा प्राक् ऐतिहासिक काल में बनल हे। (ii) लोककथा लोकें आपन संग जन्दे गेला हुन्दे लेले गेला। एहे प्रसारवाद हे ।

आलोचना– (i) नृतत्ववादी सभे बेनपेफक मत के नाञ मानल हथ। ओखिन कर कहेक हे कि सोब लोककथाक उद्गम स्थल भारते हे ई जरूरी नखे। (ii) लोककथाक कथानक (अभिप्राय तत्व) में भिन्नता पावल जा हे।(iii) लोककथाक अभिप्रायतत्व देस–काल आर परिस्थितिक मुताबिक बदइल जा हे ।

2. प्रकृतिवाद कर सिद्धान्त – ई सिद्धान्त के मनवइया सभेक कहेक हे कि भिनु–भिनु रूप आर चमत्कार के देइखके कहनी बनवल जाहे, गढ़ल जाहे। सुरूज गहन आर चाँद गहन कर कल्पना (राहु से ग्रास करल) कहनी सुनल जाहे। ई सिद्धान्त कर मनवइया सभे भारतेक पौराणिक कथाञ बिसुआस कर हथ।

आलोचना – (i) एकर आलोचक प्रसारसादेक समर्थक सभे हथ। एखिन कर कहेक हेकि हर कहनीक पाछु पौराणिक आधार नाञ रह हे। (ii) हर कहनीक आधार प्रकृति हे, ई कोइ जरूरी नखे। (iii) परिस्थिति आर परिवेस कर मुताबिक कहनीक आधार बदलइत रह हे।

3. मनोविश्लेषणवाद कर सिद्धान्त – ई मत कर मनवइया बा गढ़वइया मनोवैज्ञानिक सभे हथ। फ्रायड आर उनखर समर्थक सभेक कहेक हे कि हर कहनीक पाछु कुछ मनोवैज्ञानिक ओजह रह हे। अचेतन अवस्थाञ छुपल 'यौन' सम्बन्धी दमित इच्छाक पूर्ति खातिर कहनी गढ़ल जा हे। एक राजाक तीन–चाइर बहु (पत्नी) रहेक आर ओकर में एगो

के बेसी सुन्दर रहेक, जकर बाठे राजाक झुकाव बेसी रहेक बात कहनीञ रहेक टा वासनापूर्ति के देखवे हे ।

आलोचना – (i) मनोवैज्ञानिक मत रखवइया बा मनवइया सभीनों फ्रायड कर बात के नाञ मान हथ। ओखिन कर कहेक हे कि हर कहनी काम–वासना पूर्ति खातिर नाञ गढ़ल जा हे। (ii) ओखिन कर कहेक हे कि लोकेक अचेतन में खाली काम–वासनाक इच्छाय नाञ दमित हेवहे, मगुर जीवन में आरो किसिम कर इच्छा हे जे दमित हेव हे। (iii) ढेइर अइसन कहनी हे जकर में 'यौन प्रवृति' नाञ पावल जा हे। (iv) भूत–प्रेत, पशु–पक्षी पौराणिक हेन–तेन रकमेक कहनीञ 'यौन प्रवृति' नाञ पावल जा हे।

4. व्याख्यावाद कर सिद्धान्त – लोककथाञ रीति–नीति, आचार–विचार–बेवहार, सामाजिक परथाक परिपालन आर नीतिपरक बात (नैतिक विचार) में आस्थाक बात माइन के 'आदर्शवादी' सभे व्याख्यावाद कर सिद्धान्त देल हथ ।

आलोचना –(i) एकर आलोचक सभे कह हथ कि शिक्षाप्रद कहनी भले एकर संगे लागु हेवत मगुर सोब कहनी अइसन हेवत,ई जरूरी नखे।से ले कहनीक उदगम एकरा मानेक टा ठीक नखे।

5. बिकासवाद कर सिद्धान्त – टायल महोदय कहनीक उद्गम जगह–ठाँव नाञ माइनके मानसिक समानता के माइन के विकासवाद कर सिद्धान्त देल हथ। उनखर कहेक हे कि मानसिक समानताक भाव मनवइएं (मानव में ही) नाञ पावल जाहे मेन्तुक मानवेतर जीवों में पावल जाहे। जइसे – सियार के चतुर (चालाक) हेवेक, सतवइ माँय के सतवइ बेटा से डाह (ईर्ष्या) हेवेक बा नाञ माइनके जान से मारेक भाव आइ जाहे। मानसिक समानताक चलते ही भूत–प्रेत आर पशु–पक्षीक (चरञ–चुनगुनीक) कहनी एक नीयर भाव पावल जाहे।

आलोचना – ई मत कर व्याख्या प्रसारवादेक सिद्धान्त से पूरा–पूरा मेल खाहे, से ले एकर माइनता सूइन (शून्य) हेइ जाहे।

6. यथार्थवाद कर सिद्धान्त – ई सिद्धान्त कर मनवइया वा गढ़वइया सभेक कहेक हे कि हर कहनीक घटना वास्तविक (यथार्थ) हेव हे भले ओकर अभिप्राय तत्व में तनी–मनी बदलाव आइ जाहे। भासा–सइली में फरक आइ जाहे आर ई तो कहवइया के मानसिक गुन (प्रवृति) पर निर्भर कर हे। घुइर–घुइर बार–बार। पीढ़ी–दर–पीढ़ी मुखस्त रूपे सुनवल कर चलते ई आइ जाहे मगुर अभिप्राय तत्व में परक नाञ आवहे भले ओकर नाम–पताञ फरक हेवे पारे।

आलोचना – (i) आलोचक सभेक कहेक हे कि कहनी तो काल्पनिक हेवहे। एकर में वास्तविक बात कहेक टा सरासर झूठ हे। (ii) यथार्थ घटना अभाव में ई सिद्धान्त लंगडी हे।

7. समन्वयवाद – मूल्यांकन (निष्कर्ष) रूपे एहे कहल जाय पारे कि हर सिद्धान्त में कुछ गुन हो तो कुछ दोस। सेले सोबके मिलाइके एगो समन्वयवाद कर सिद्धान्त देल जाय आर हर नजइरे एकर परम्परा के देखवल आर बिचारल जाय।

लोककथाक उद्गमेक बारे बिदुवानेक विचार

लोककथाक जनम कहाँ, कहिया हेल हे, कइसे सुरू हेल आर पसरल ई तो एगो गंभीर सवाल हे, मगुर ई तो सनातन सच हे कि मनवइ में कहनी सुनेक प्रवृति आदिम प्रवृति हे, से ले ई कहल जाय पारे कि कहनी (लोककथा) मानवेक सृष्टि काले से सुरू हेल हे।

डॉ0 सत्येन्द्र लोककथा विज्ञान किताबेक भूमिकाञ लिखल हय–लोककथा या लोक

कहनी का उद्गम इतना ही प्राचीन है जितना कि मनुष्य का जन्म। अतीत में ही मनुष्य के जन्म के साथ ही उसमें आश्चर्य, भय और रति का उदय हुआ। ये मानवीय अस्तित्व के अभिन्न तत्व थे। इन्हीं तीनों मौलिक भावावेगी प्रेरणाओं से जहाँ मानव ने अपना विकास किया और मूल आदिम मानव का बीज वपन कर उसमें अंकुरण किया, उन कल्पनाओं को भी जन्म दिया जिसमें कहानी का निर्माण होता है।''

श्री चन्द्र जैन लोककथाक उद्गमेक संदर्भ में लिखल हथ, उनखरे सबदें – ''लोककथाएँ इस विराट विश्व में क्षीर नवनीतवत समाई हुई है। इनका जन्म संसार की उत्पत्ति के साथ ही हुआ है तथा इसकी परिधि दुनिया की सीमा के साथ साथ आदिकाल से दृढ़ बढ़ती जा रही है। जिस प्रकार सूर्य की किरणें सर्वत्र व्याप्त रहती हैं, उसी प्रकार लोक का कोई भी ऐसा भाग नहीं है जिनके प्रांगण मे ये कथाएँ विद्यमान न हो।'' (लोककथा विज्ञान, निवेदन)डॉ0 श्रीराम शर्मा 'लोक साहित्यः सिद्धान्त और प्रयोग में लिखल हथ– ''लोककहानियों की मौलिक परम्परा के बाद कहानी लेखन की परम्परा का उदय भी भारत में सर्वप्रथम हुआ और इसीलिए वैदिक साहित्य में कहानियों के मूल सूत्र देखने को मिलते हैं।''

डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय भी लोककथाक उत्पति मानवेक सृष्टि काले से मानल हथ । उनखरे सबदें, ''भारतीय लोक साहित्य में लोककथाओं की संख्या अनन्त हैं। केवल हिन्दी की ही विभिन्न बोलियों में प्रचलित कथाओं का संग्रह किया जाय तो कई वृहत संकलन तैयार हो सकते हैं। जिस प्रकार आदिकाल का जन्म इस देश में हुआ था, उसी प्रकार सबसे प्राचीन कथाओं की उत्पत्ति भी इसी पुण्यभूमि में हुई थी। भारतीय कथा साहित्य अत्यन्त प्राचीन है।'' (लोकसाहित्य की भूमिका)